

चित्र संयोजन

(COMPOSITION)

चित्र संयोजन (Composition) का अभिप्राय सुव्यवस्थित, नियमबद्ध रचना से है, चाहे वह संगीत, साहित्य तथा चित्रकला कोई भी माध्यम हो। सभी में सुनियोजित रचनाएँ की जाती हैं।

चित्र संयोजन में व्यक्ति अपने मन के भावों एवं विचारों को चित्र द्वारा दूसरों पर प्रकट करता है। व्यक्ति की भावनाएं अनुभव से उजागर होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति का आस-पास का वातावरण उसे अवश्य प्रभावित करता है। अपने चारों ओर जीवन और प्रकृति की गहराई ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। जितना अधिक आप ग्रहण करेंगे, उतना ही सफल कार्य आप कर सकेंगे। इस अभ्यास एवं अनुभव को बढ़ाने के लिए एक स्केच बुक आपको सदा अपने पास रखनी चाहिए। जहाँ पर, जो भी वस्तु आदि आपको दिखाई देती है जल्दी से उसका रेखा-चित्र बनाया जा सकता है। इससे आपकी स्मरण शक्ति तथा रेखाओं को बल मिलेगा।

चित्र संयोजन (Composition) के कुछ मुख्य अंग होते हैं जिनको सुव्यवस्थित ढंग से हमने अपने चित्र में उभारना है। ये अंग निम्न प्रकार से हैं :-

1. रूप (Form)
2. अनुपात (Proportion)
3. सन्तुलन (Balance)
4. लय (Rhythm)
5. प्रधानता (Domination)
6. रंग (Colour)

चित्रकला के उपरोक्त अंगों को अब विस्तार से समझने का प्रयास करें :-

1. **भेद (Kinds)** – चित्रकला दो मुख्य भागों में विभक्त है- (i) ललित कला (Fine Art) (ii) वाणिज्य कला (Commercial Art)। ललित कला को स्वान्तः सुखाय तथा वाणिज्य कला को पराय सुखाय भी कहा जा सकता है। आपके पाठ्यक्रम में Composition तथा Illustrations ललित कला (Fine Art) के अन्तर्गत आते हैं जबकि Poster designs, Book Cover Designs वाणिज्य कला के अंग हैं। ललित कला में चित्र अपनी भावनाओं पर आधारित होते हैं और वाणिज्य कला में जो वास्तविकता है, वही दर्शाया जाता है।
2. **रूप (Form)** – चित्र संयोजन में विशेष स्थान रखता है। किसी भी वस्तु, पशु, पक्षी या मानव को सर्वप्रथम देखने में उसका एक प्रभावशाली रूप मस्तिष्क पर अंकित हो

जाता है। मस्तिष्क पर यह अपने ही ढंग से आकार बना लेते हैं। अतः ये रूप कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे यथार्थवादी, अमूर्त, प्रतीकात्मक, सरल तथा जटिल। अपने मन में विद्यमान इन्हीं रूपों को कलाकार अपनी कला में प्रयोग करता है। अतः चित्र-संयोजन में रूप आदि का कोई बन्धन नहीं है केवल अपनी भावनाओं के आधार पर ये बनते हैं।

3. **अनुपात (Proportion)** – अनुपात का अर्थ किसी भी वस्तु के भागों का आपसी सम्बन्ध है। अनुपात द्वारा सुन्दरता, सुडौलता, सामन्जस्य तथा मनोवैज्ञानिक लय उत्पन्न हो जाती है। इसलिए चित्र में प्रत्येक अंग का अनुपात सही होना चाहिए। अनुपात रहित चित्र आँखों को खटकते हैं तथा उनमें कोई आकर्षण नहीं होता। इसलिए अनुपात रहित चित्र सफल नहीं माना जा सकता।
4. **प्रधानता (Domination)** – चित्र में प्रधानता तथा गौण (Domination and Subordination) एक नियम है जिसका पालन करना भी आवश्यक है। जिस विषय पर चित्र बनाना है उसको प्रधानता देना है बाकी वस्तुएँ गौण अथवा महत्वहीन होनी चाहिए। इस नियम को उजागर करने के लिए आवश्यक है कि चित्र में विषय को कागज के अधिक भाग में चित्रित किया जाए और रंगों में भी उचित तथा प्रभावशाली रंग प्रयोग किए जाएँ। यदि इस नियम की अवहेलना हो गई तो चित्र में जो चीज़ आप दर्शाना चाहते हैं वह नगण्य तथा धूमिल पड़ जाएगी।
5. **सन्तुलन (Balance)** – किसी स्थान की शून्यता को समाप्त करके जब कोई कलाकृति बनाई जाती है तो उस समय सन्तुलन के नियम को काफी गम्भीरता से पालन करना चाहिए। इसके लिए तराजू का उदाहरण समझने के लिए लिया जा सकता है जब तक सामान और तोल (बांट) का सन्तुलन नहीं होगा तो ग्राहक सामान नहीं लेगा। जब बिल्कुल बराबर हो जाएगा तो देखने वाला (ग्राहक) सन्तुष्ट हो जाता है। यदि झुकाव एक ही तरफ अधिक होगा तो तराजू आँखों को खटकता रहेगा। इसी प्रकार चित्र में यदि आकृति तक की ओर अधिक वजन रखेगी तो चित्र का सन्तुलन बिगड़ जाएगा जिसके फलस्वरूप चित्र भी सफल नहीं माना जाएगा। यह नियम केवल रेखांकन तक ही सीमित नहीं अपितु रंग योजना में भी इसका विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। आकर्षक एवं प्रधान रंग चित्र के मुख्य विषय पर ही लगाए जाएँ।
6. **लय (Rhythm)** – लय प्रत्येक कला में अपना विशेष स्थान रखता है। लय का सबसे प्रधान गुण यह है कि दर्शन की दृष्टि बिना अटके व रुकावट से सम्पूर्ण आकार पर दौड़ जाए, जिससे चित्र में सामान्जस्य की उत्पत्ति हो जाएगी। लय चित्र में रेखाओं द्वारा उत्पन्न होती है। रेखाओं में लय के उदाहरण आगे चित्र द्वारा विभिन्न उदाहरण द्वारा समझाया गया है। प्रकृति एवं दैनिक जीवन में आपको कई लय के उदाहरण मिलते हैं। पानी की लहरें, लताओं का बढ़ना, घोड़े की दौड़ से उत्पन्न पांवों की आवाज़, घड़ी की टिक-टिक, नृत्य

में नृतक में अंग संचालन आदि यह सब लय को प्रदर्शित करते हैं। चित्र में रेखाओं में बल भी तभी आएगा जब उचित लय होगी। अतः लय के लिए स्वतन्त्र हाथ से विभिन्न प्रकार की रेखाओं का बार-बार अभ्यास करना उचित लय होगी। अतः लय के लिए स्वतन्त्र हाथ से विभिन्न प्रकार की रेखाओं का बार-बार अभ्यास करना परमावश्यक है।

7. रंग (Colour) – रेखांकन पूरा होने के पश्चात् रंग का प्रयोग किया जाता है। रंग बहुत आकर्षक होते हैं। चित्र में आकर्षण बढ़ जाता है। इसके लिए रंग योजना (Scheme Colour) का ज्ञान आवश्यक है। रंग का पूर्ण विवरण (Chart) सहित आपकी पुस्तक (Textile Designs) के भाग में समझाया गया है। लाल, नीला और पीला तीन बुनियादी रंग (Secondary Colours) कहलाते हैं। इन्हीं से सारे रंग बनते हैं, इनको आपस में बराबर मात्रा में मिलाने से द्वितीयक रंग (Secondary colours) बनते हैं। इनका नाम संतरी, जामुनी और हरा है। बुनियादी (Primary) और द्वितीयक (Secondary) रंगों को मिलाकर तृतीयक (Tertiary) रंग बनते हैं। इसमें से कुछ रंग गरम (Warm Colour) होते हैं। कुछ शीतल रंग (Cold Colour) होते हैं। लाल और पीला रंगों की प्रधानता वाले रंग गरम रंग (Warm Colour) होते हैं। नीला और नीले रंग की प्रधानता वाले रंग शीतल रंग (Cooled Colours) होते हैं। रंग योजना (Colour Scheme) में दोनों प्रकार के रंग प्रयोग किए जाते हैं। यदि बाकी शीतल रंग हैं तो उनका पूरक रंग गरम रंग का चित्र में होना आवश्यक है। रंग चक्र में सफेद और काला रंग नहीं है। इन्द्र धनुष में भी केवल सात रंग होते हैं—उनका नाम VIBGYOR है। V-Violet, I-Indigo, B-Blue, G-Green, Y-Yellow, O-Orange, R-Red. इस इन्द्रधनुष के रंगों में सफेद और काला नहीं है। ये Pigments कहलाते हैं।

रंगों का हमारे दैनिक जीवन में बड़ा प्रमुख स्थान है। रंगों का अपना-अपना मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होता है। जैसे—लाल रंग गर्म रंग के नाते जोशीला, उत्तेजक तथा क्रोध का द्योतक है। पीला रंग प्रसन्नता, उमंग एवं सफलता का प्रतीक है। हरा रंग शान्ति एवं कोमलता का प्रदर्शन करता है। नीला गम्भीरता, शान्ति एवं ठण्डक का आभास देता है। इन्हीं विभिन्न प्रभावों पर घर की तथा अन्य स्थानों की सजावट निर्भर करती है। उदाहरण के लिए ड्राईंग रूम की सजावट के लिए जो भी वस्तु आप बनाना चाहते हैं उसमें आकर्षण अधिक होना चाहिए। इसलिए उनमें लाल तथा पीले रंग की प्रधानता होनी चाहिए। ड्राईंग रूम में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आनी चाहिए। परन्तु सोने के कमरे (Bed Room) में यदि चटकीले-भड़कीले रंग के पर्दे, दीवारें, या चित्र होंगे तो व्यक्ति पर उसका प्रभाव उत्तेजक पड़ेगा जिसके कारण वह शान्तिपूर्वक आराम नहीं कर सकता या सो नहीं सकता। इसी प्रकार समय या वातावरण के अनुसार रंगों का चुनाव करना चाहिए।



लय के उदाहरण



सन्तुलन की तुलना

यही बात चित्र में भी प्रदर्शित होनी चाहिए। यदि आप खुशी का कोई चित्र दर्शाना चाहते हैं तो उसमें नीला या काला रंग प्रधान नहीं होना चाहिए। पीला, संतरी गुलाबी आदि रंगों का अधिक प्रयोग किया जाए। यदि दुर्घटना या दुखद वातावरण प्रदर्शित करना है तो नीला, जामुनी, गहरा नीला या काला आदि रंगों का प्रयोग करना चाहिए।

चित्रकला में कागज़ का प्रयोग – आपके पाठ्यक्रम के अनुसार यद्यपि आपके लिए माध्यम की छूट है किसी भी प्रकार के कागज़ तथा रंग आप प्रयोग कर सकते हैं परन्तु समय की दृष्टि से केवल कागज़ पर पेन्सिल, पेस्टल रंग तथा जल रंग से ही आप कार्य करते हैं। तेल रंगों (Oil Colours) के लिए समय का अभाव रहेगा। कागज़ निम्न प्रकार के प्रयोग किए जा सकते हैं :-

- 1. कार्टाईज़ ड्राईंग पेपर** – यह समतल, मोटा पेपर होता है तथा पेन्सिल व पोस्टर रंगों के लिए उपयुक्त है।
- 2. कैंट ड्राईंग पेपर** – यह मोटा तथा अधिक खुरदरा कागज़ होता है। इस पर जल रंग का कार्य अधिकतर किया जाता है।
- 3. हैन्डमेड पेपर** – यह मोटा तथा अधिक खुरदरा कागज़ होता है। इस पर जल रंग का कार्य अधिकतर किया जाता है।
- 4. आर्ट कार्ड पेपर** – यह अधिक सफेद, मोटा तथा बहुत ही मुलायम सतह का होता है। अधिकतर इसका प्रयोग ब्लैक इंक से ड्राईंग करने में होता है, इससे ब्लाक्स सुन्दर बनते हैं।
- 5. पेस्टिल पेपर** – यह कई रंगों में उपलब्ध होता है अधिकतर भूरे रंग में प्रयोग होता है। इस प्रकार पेस्टिल रंगों का स्टिक से काम किया जाता है।
- 6. कार्ड ड्राईंग कागज़** – यह साधारण चार्ट बनाने के काम आता है, इसमें अनेक रंगों में चार्ट मिल जाते हैं।
- 7. पोस्टर पेपर** – पोस्टर का कार्य करने के यह कागज़ प्रयोग किया जाता है। इसमें अनेक रंगों की एक ओर Back ground बनाई होती है जिससे Back ground लगाने की आवश्यकता नहीं होती।
- 8. तैल रंग कागज़** – यह तैल रंगों से चित्र बनाने के काम आता है। इसकी ऊपरी सतह बारीक दानेदार होती है।

चित्रकला में रंगों का प्रयोग – चित्रों में अनेक प्रकार के रंग प्रयोग किए जाते हैं। प्रायः जल रंगों का ही प्रयोग होता है, परन्तु यहाँ आपकी जानकारी के लिए सभी रंगों का विवरण दिया जाता है :-

1. **जल रंग** – यह रंग टिक्कियों तथा छोटी-छोटी द्यूब्स में आता है। यह पानी में घोलकर प्रयोग होता है। इसका प्रयोग अधिक पानी में होता है। जलरंग हल्के से गहरे रंग की ओर लगाए जाते हैं। यह पारदर्शी रंग होते हैं। जल रंग के प्रयोग के लिए काफी अभ्यास की आवश्यकता होती है।
2. **पोस्टर रंग** – यह रंग शीशियों में गाढ़ा घोल के रूप में आता है। यह अपारदर्शी, मोटा तथा स्थूल प्रभाव का रंग है इसमें एक रंग सूखने के बाद दूसरा रंग प्रयोग किया जाता है।
3. **पेस्टिल रंग** – यह रंग चाक के आकार का होता है, इसके दो भेद हैं, एक सूखा (Dry) दूसरा तेलयुक्त (Oil Pastal)। सूखा वाला पेस्टिल रंग मिक्स किया जा सकता है परन्तु तैलयुक्त आसानी से मिक्स नहीं होता है।
4. **तैल रंग** – यह शुद्ध किए हुए अलसी के तेल से बनते हैं। यह गाढ़े पेस्ट के रूप में द्यूब्स में प्राप्त होते हैं। आवश्यकता पड़ने पर यह तारपीन के तेल से पतला किया जाता है। तैल रंग का प्रयोग प्रायः गहरे से हलके की तरफ किया जाता है।

विद्यार्थी अधिकतर पेन्सिल की शेडिंग करके वस्तु चित्रण को जल्दी समाप्त करने की चेष्टा करते हैं। यदि थोड़ा और अभ्यास करके वस्तु चित्रण में रंगों का प्रयोग करें तो अधिक अंक प्राप्त होने की भी सम्भावना हो सकती है। परन्तु रंगों के कार्य में सावधानी, रुचि, स्वच्छता की आवश्यकता पड़ेगी। पेन्सिल का कार्य निरीक्षण तक पहुँचने में प्रायः खराब सा हो जाता है।

प्रकृति चित्रण (Nature Study) – वस्तु चित्रण में आपने अधिकाँश घर के अन्दर की वस्तुओं का चित्रण किया है। अब प्रकृति चित्रण के लिए घर से बाहर प्रकृति की गोद में जाकर आपको अध्ययन करना है। सबसे पहले घर से बाहर वाटिकाओं में अनेक प्रकार के पुष्प, तितलियाँ तथा लताएँ आदि किसके मन को नहीं मोहती, कला छात्र के लिए पहले ही एक आवश्यक सामग्री बताई गई है जो कि उसके पास हर समय रहनी चाहिए वह है स्केच बुक (Sketch Book)। जहाँ पर जो भी मनपसन्द वस्तु आपको दिखाई दे तुरन्त स्केच बुक निकाल कर उसका जल्दी से रेखांकन कर देना चाहिए। हो सकता है प्रारम्भ में आपके रेखांकन इतने सुन्दर न

अभ्यास के बाद आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपके रेखाचित्रों में सुधार एवं रेखाओं में बल आता जा रहा है। स्केच करते समय आकृतियों का सही रूप तथा अनुपात ध्यान में रखें। स्केचिंग से उत्तम अभ्यास होता है। गहरी दृष्टि की क्षमता बढ़ती है। रेखांकन (Drawing) में शक्ति (Force) उत्पन्न होती है जो एक सही चित्र के लिए बहुत आवश्यक है। (Sketch Book) का एक लाभ यह भी है कि इसमें एकचित रेखाचित्र (Sketches) आपके संयोजित चित्र बनाते समय बहुत सहायक होते हैं।

प्रकृति चित्रण में सबसे पहले फूल-पतियों का चित्र संयोजन किया जाए। एक तो यह घर के बिल्कुल पास उपलब्ध होते हैं और फिर संसार की सर्वोत्तम सुन्दरता एवं आकर्षण भी तो इसमें निहित हैं। इस चित्रण में पहले आकृति का बाहरी रूप खींच कर कागज में संयोजित कर लेते हैं। फिर क्रमशः बारीकियों का विभाजन करते हुए रेखाचित्र पूरा करते हैं। यहां तक हो सकें प्रकृति चित्रण में प्रकृति की चीजों के सामने बैठकर चित्र बनाना चाहिए तभी उसमें वास्तविकता आएगी वरना कल्पना से सही नहीं बन पाएगा। चित्र को सही संयोजन करने के लिए निम्नलिखित तरीका अपनाया जाए तो अधिक आसान और प्रभावशाली होगा। एक पतला गत्ता या मोटा कागज लेकर उसके मध्य में 6×4 सें० मी० की एक आयत काट दो। जिस चीज का चित्र संयोजन आप करना चाहते हैं उसकी कटी हुई आयत के अन्दर से काफी देर तक गहरी दृष्टि से अध्ययन करो। एक चित्र का रूप जब तक वह धारण नहीं कर लेता तब तक बारीकी से उसे देखते जाएं। उस वस्तु का कितना भाग चित्र में लेना है, कितना भाग छोड़ना है, ऊंचाई में बनाना है कि लम्बाई में, इन सब बातों की सही पहचान आपको इस तरीके से मालूम हो जाएगी, परन्तु इसके लिए अभ्यास चाहिए।

कक्षा में जब कला विद्यार्थियों को अमुक विषय पर चित्रांकन करने के लिए कहा जाता है तो वह परेशान से दिखाई देते हैं कि चित्र कैसे बनाया जाए। कारण स्पष्ट है, स्वतन्त्र रूप से रेखाचित्रों का बार-बार अभ्यास न करना, गहरी दृष्टि से वस्तुओं को न देखना और रुचि से काम न करना। यदि ये बातें याद रहें, अभ्यास होता रहे, Sketch Book में रेखाचित्रों का संग्रह होगा तो आप एक दम वहां से संकेत लेकर अपना चित्र आरम्भ कर सकते हैं और आपके काम में मौलिकता भी आएगी जिसका होना आपके सफल कार्य के लिए अनिवार्य है।

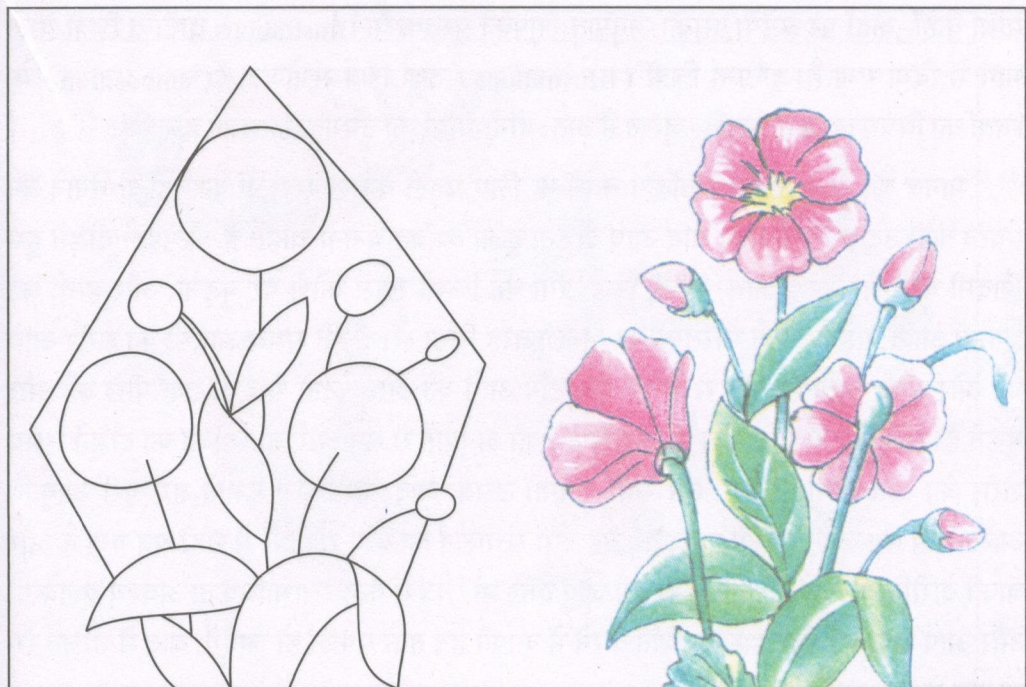
प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत आप विभिन्न प्रकार के पुष्पों, टहनी सहित पुष्प एवं पतियाँ, फलों का पेड़ अथवा फलों से युक्त टहनी, किसी सुन्दर पेड़ का चित्र संयोजन, बर्फ से ढका पेड़, खेतों का चित्र संयोजन, रमणीय पर्वत मालाओं का दृश्य, पहाड़ों से टकराती आगे बढ़ती नदी का दृश्य, सूर्योदय, बर्फ का मनमोहक दृश्य आदि विषय को अपने चित्र संयोजन के लिए आसानी से चुन

सकते हैं। इसमें आवश्यक नहीं कि आपने पूरा दृश्य चित्रित करना है। आप पूरी बारीकियों के साथ बनाने का प्रयत्न करो। यहाँ तक आप केवल किसी टहनी का एक पत्ता भी प्रथम चरण में बनाने को चुनकर उसकी पूरी बारीकियाँ दिखाओ। एक पुष्प को छाँटकर बारीकी दर्शाते हुए चित्र बनाओ। इस प्रकार जब आप बाद में पूरी टहनी, या पुष्पों का समूह बनाओगे तो आसानी रहेगी क्योंकि आप उसका एक भाग पहले ही काफी अध्ययन करके बना चुके हैं। आपकी पुस्तक में ये Colours या Black and White में दिए गये हैं, परन्तु आपने वास्तविक रंगों का प्रयोग करते हुए चित्रों को पूर्ण करना है। रंगों से कार्य संजीवता, पृथकता एवं आकर्षण भी आता है। प्रकृति चित्रण बहुत रुचिकर एवं सुगम विषय भी हैं। इसके पूर्ण-अभ्यास के पश्चात् पशु, पक्षी एवं मानव आकृतियों का अभ्यास भी प्रारम्भ होगा। चित्र में पुष्प संयोजना का ढंग दिया गया है।

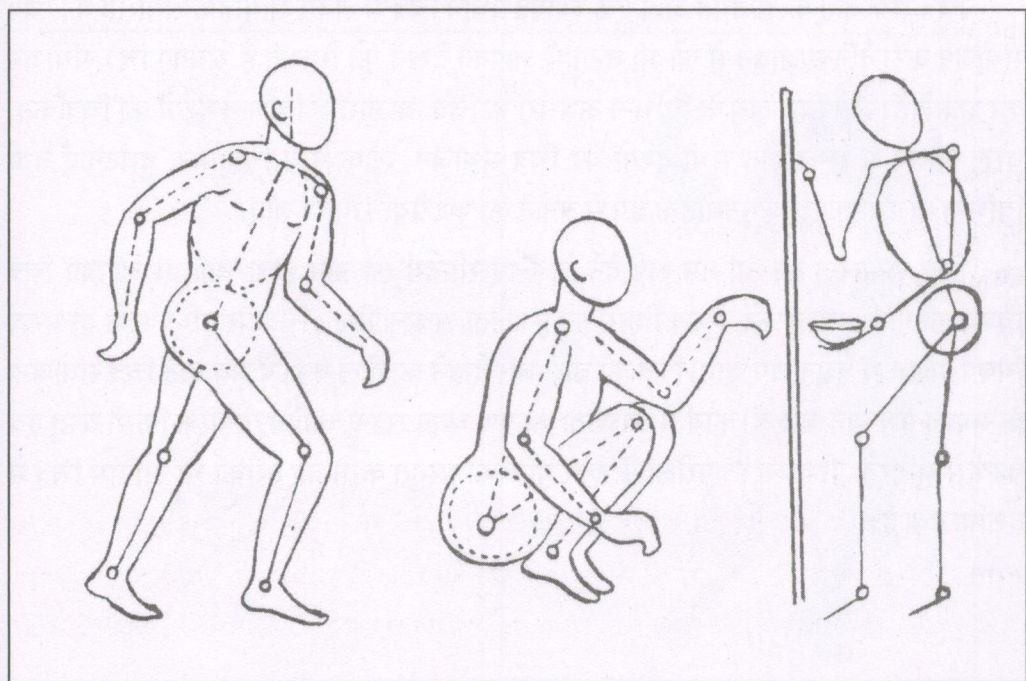
सजीव आकृति चित्रण (Life Study) – सजीव आकृतियों में पशु-पक्षी तथा मानव आकृतियाँ आ जाती हैं। पिछले अभ्यासों में आप प्रकृति चित्रण का काफी अध्ययन कर चुके हैं अब सजीव आकृतियों का चित्रण करेंगे। यह आकृतियाँ आप छोटी कक्षाओं से भी करते आ रहे हैं। अब आपके कार्य में और निखार आना चाहिए। आकृतियाँ सही एवं रंग योजना प्रभावशाली होनी चाहिए।

पशु-पक्षी बनाने के लिए भी बारम्बार रेखाचित्रों का अभ्यास महत्वपूर्ण है। कोई पशु-पक्षी आप जब देखते हैं या कभी-कभी चित्रों से भी संकेत लेकर अपनी Sketch Book में रेखाँकन करना चाहिए तभी आपको अनुपात एवं सही आकृति का ज्ञान हो सकता है। पशु एवं पक्षी अण्डा आकृतियों द्वारा बनाई जाती हैं। सिर के लिए, पेट के लिए दो भिन्न-भिन्न नाप के अण्डा आकृति बनाकर फिर उसमें अंगों को बारीकियों से बनाते हैं। परन्तु उसमें अनुपात का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। किसी पक्षी की गर्दन छोटी होती है किसी की लम्बी। अतः सिर और पेट के लिए बने अण्डा आकृतियों का आपसी अन्तर भी उसी प्रकार होना चाहिए। बड़े पशु के लिए अण्डा आकृति बड़ी और छोटे के लिए छोटी होनी चाहिए। उसके बाद उस पक्षी की चोंच, पूंछ, टाँगे तथा रंग आदि भी बहुत बारीकी से देखकर पूर्ण करनी होंगी। पशुओं के मुँह, टाँगे, पूंछ आदि भी पृथक-पृथक बनावट के होते हैं अतः उनका अलग-अलग ध्यानपूर्वक रेखाँकन करना बहुत अनिवार्य है, तभी उन आकृतियों का सही चित्रांकन सम्भव है।

मानव आकृति का चित्रण काफी जटिल समझा जाता है। परन्तु बुनियादी बातों का यदि बारीकी से रेखाँकन किया जाए तो काफी सरलता से चित्र बनाए जा सकते हैं। जैसे मानव आकृति का अनुपात सबसे प्रथम चरण है। पहले आपको यही स्मरण रखना होगा कि मानव के सिर से पाँव



प्रकृति के चित्र संयोजन



मानव आकृतियाँ

माथा कहाँ-कहाँ पर बनेंगे। इसका अनुपात आपकी पुस्तक के Illustrations दृष्टान्त चित्रों वाले भाग में दिया गया है। दृष्टान्त चित्रों (Illustrations) तथा चित्र संयोजना (Composition) के चित्रों का विषय लगभग मिलते-जुलते हैं अतः दोनों भागों का उपयोग लाभप्रद होगा।

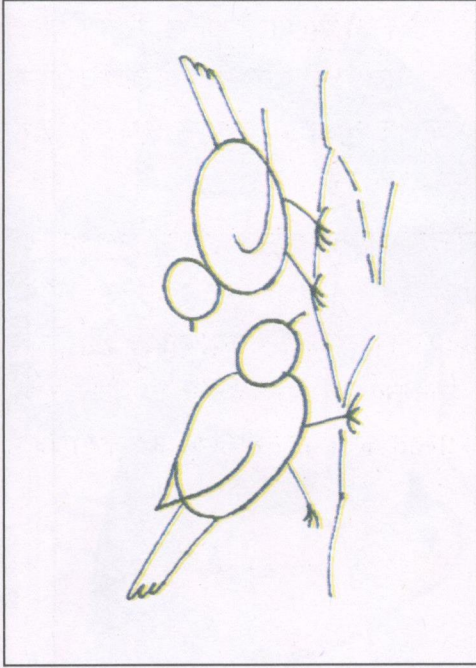
मानव की आकृति का रेखांकन करने के लिए पहले केवल रेखाओं द्वारा ढाँचा बनाने का प्रयत्न करें। उदाहरण के लिए यदि आप दौड़ता हुआ व्यक्ति बनाना चाहते हैं तो पहले दौड़ते हुए आदमी के शरीर का झुकाव, सोचें, फिर टाँगों का किसी खास कोण पर मुड़ना, और हाथों का झुकाव आदि, पहले अपने मस्तिष्क पर अच्छी तरह बिठा लें। दौड़ते समय आदमी का शरीर आगे की ओर झुका रहता है। पीठ से घुटनों तक टाँगें आगे की ओर घुटनों से एड़ी तक पीछे की ओर मुड़ते हैं। इसी क्रम से यदि आप पहले रेखाओं को अनुपात से बनाओगे तो व्यक्ति का दौड़ते समय शरीर का अंग संचालन का क्रम सही बनेगा। उसके बाद बारीकियाँ दर्शाते हुए पूरी आकृति आसानी से बन जाएगी। यदि शरीर का यह अंग संचालन का क्रम रेखाओं से सही बन गया है और बाकी बारीकियों में थोड़ी त्रुटियाँ रह भी जाएँ फिर भी चित्र में कुछ स्वाभाविकता अवश्य झलकेगी और आप भावनाएँ चित्र द्वारा प्रदर्शित करने में काफी हद तक सफल हो जाएँगे। बाद में उचित रंग योजना से चित्र पूर्ण करें।

चित्र संयोजना के अन्तर्गत आप एक व्यक्ति प्रधान चित्र से लेकर सामूहिक समारोह का चित्र संयोजन करें। दैनिक जीवन में जो भी घटनाएँ आपको देखने को मिलती हैं सबका चित्र संयोजन कर सकते हैं। जैसे विद्यालय के विभिन्न अवसरों के चित्र, बाजारों में विभिन्न दृश्यों का चित्रांकन, घरेलू जीवन से सम्बन्धित सभी दृश्यों का चित्र संयोजन, लोक नृत्य चित्रांकन, दुर्घटनाएँ तथा विभिन्न मौसमों का दृश्य मनमोहक ढंग से बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया जाए।

चित्र संयोजना को अन्तिम रूप देने के लिए सौन्दर्य का ज्ञान होना चाहिए। आपका चित्र विषय की पूर्ति अवश्य करें, मुख्य विषय को प्रधानता अवश्य मिले। चित्र पर दृष्टि पड़ते ही मुख्य विषय आँखों में घूमने लग जाए। चित्र को बार-बार देखने का दिल करें। ये सब बातें चित्र संयोजना के सफल गुण माने जाते हैं। कार्य में स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि किसी वस्तु एवं कार्य में सुन्दरता ही कला है। परीक्षा में उत्तर पुस्तिका प्रस्तुत करने का तरीका भी अन्तिम चित्र में दर्शाया गया है।



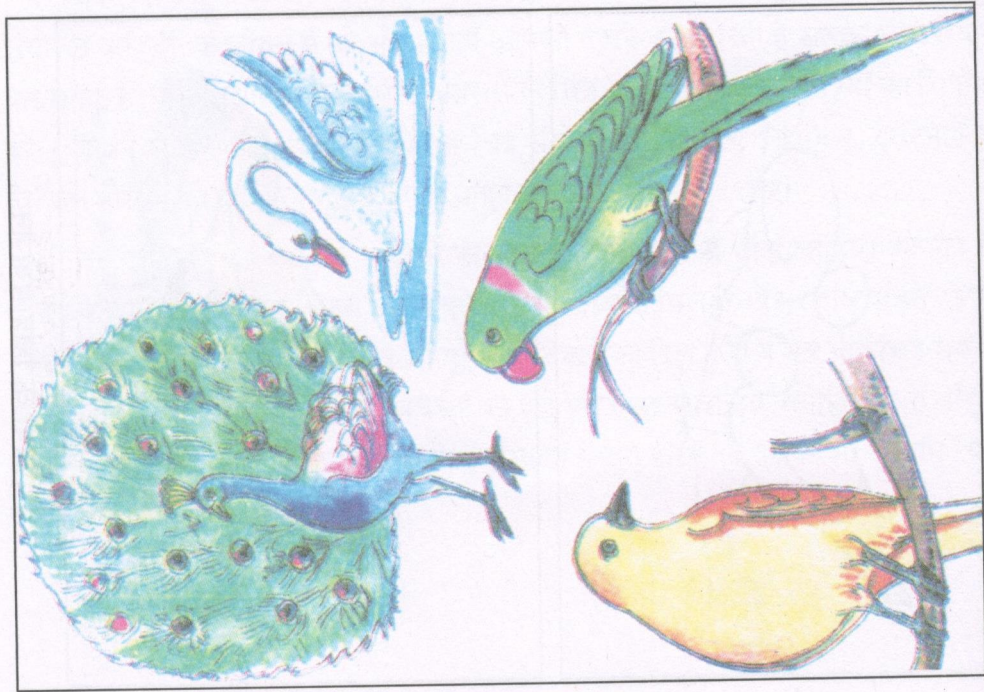
पक्षियों का चित्रण



पक्षियों के चित्र संयोजन

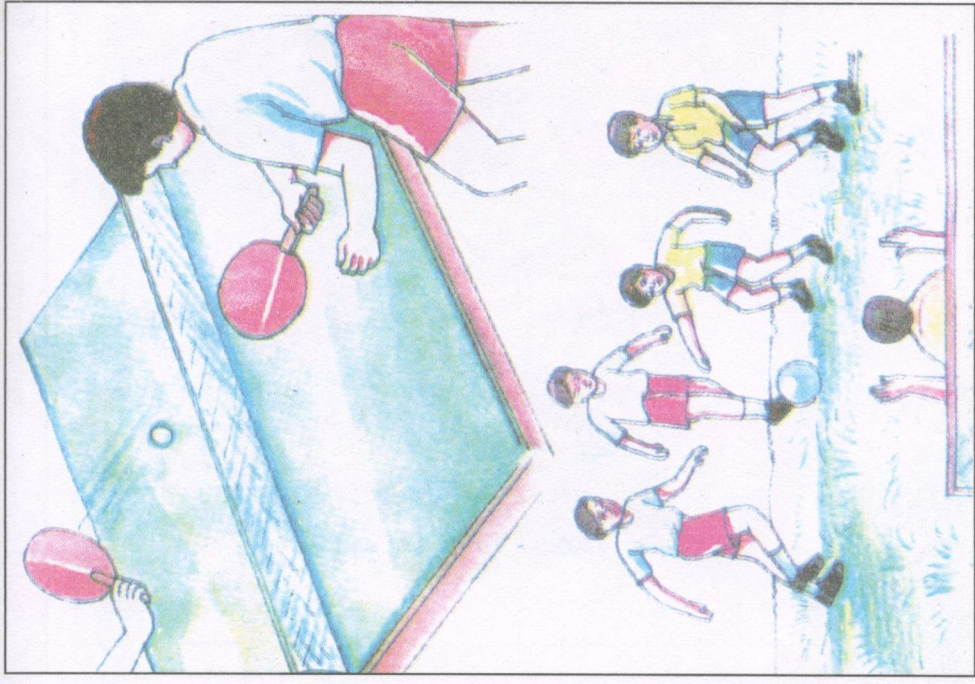


पशुओं का चित्रण

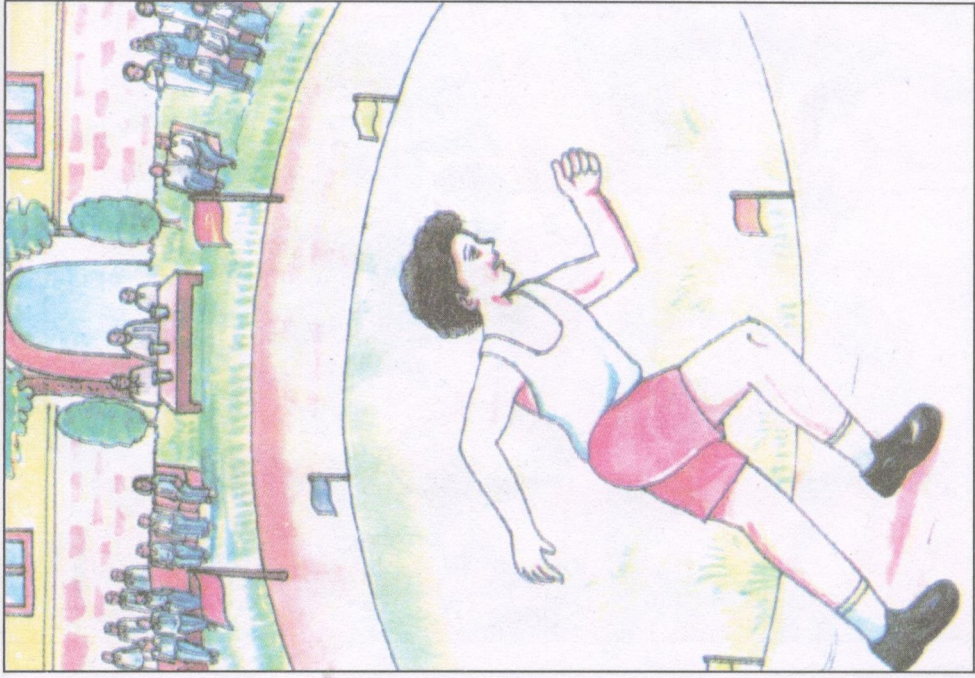


पक्षियों का चित्रण

खेलों के दृश्य

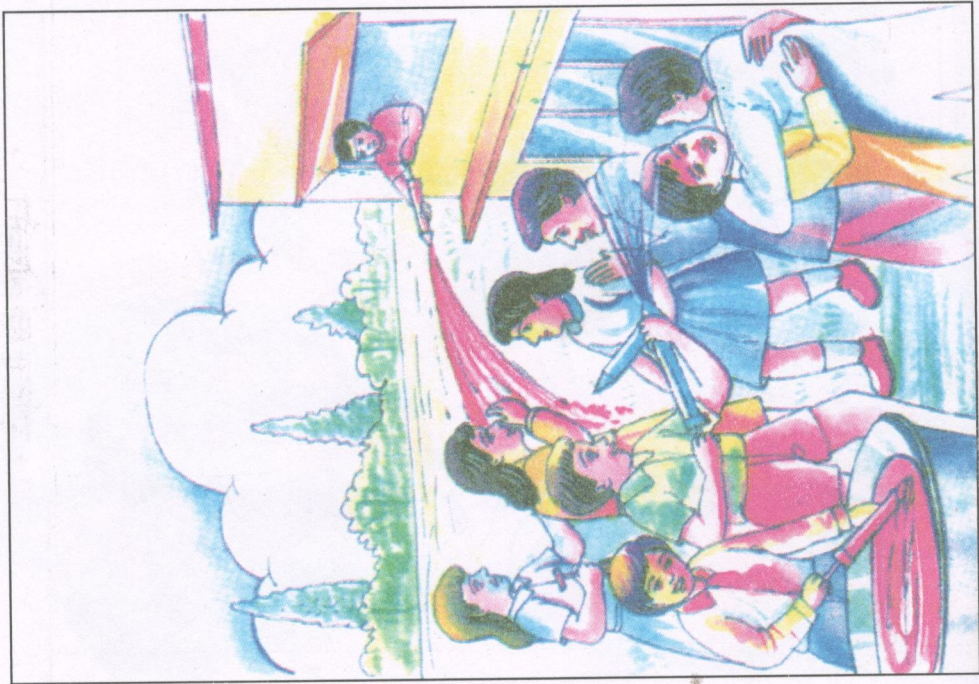


लम्बी दौड़ पर धावक

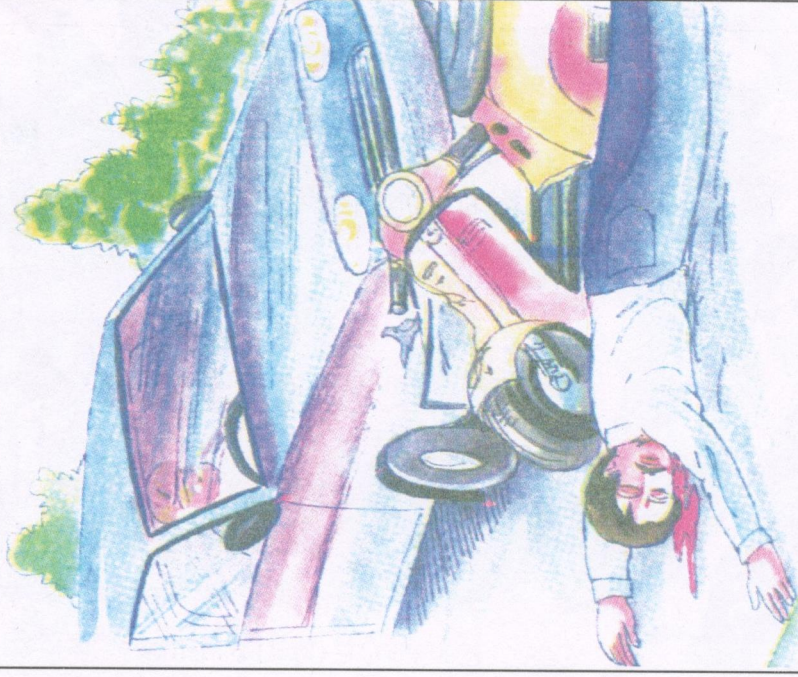




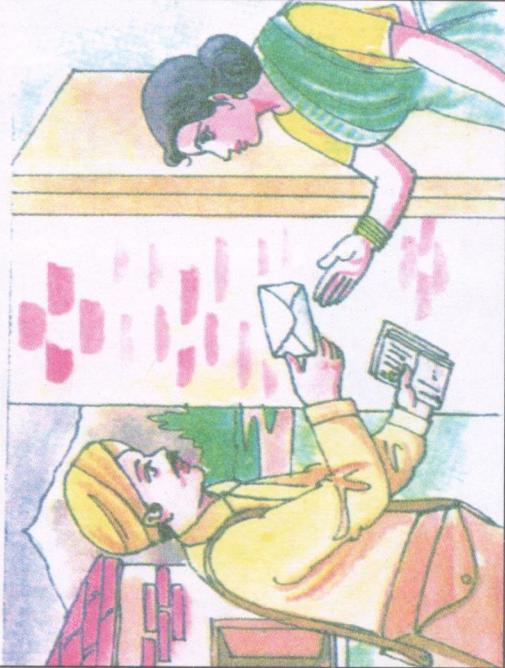
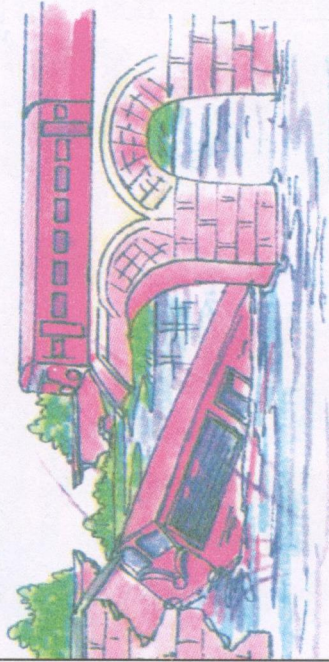
भालू-वाला



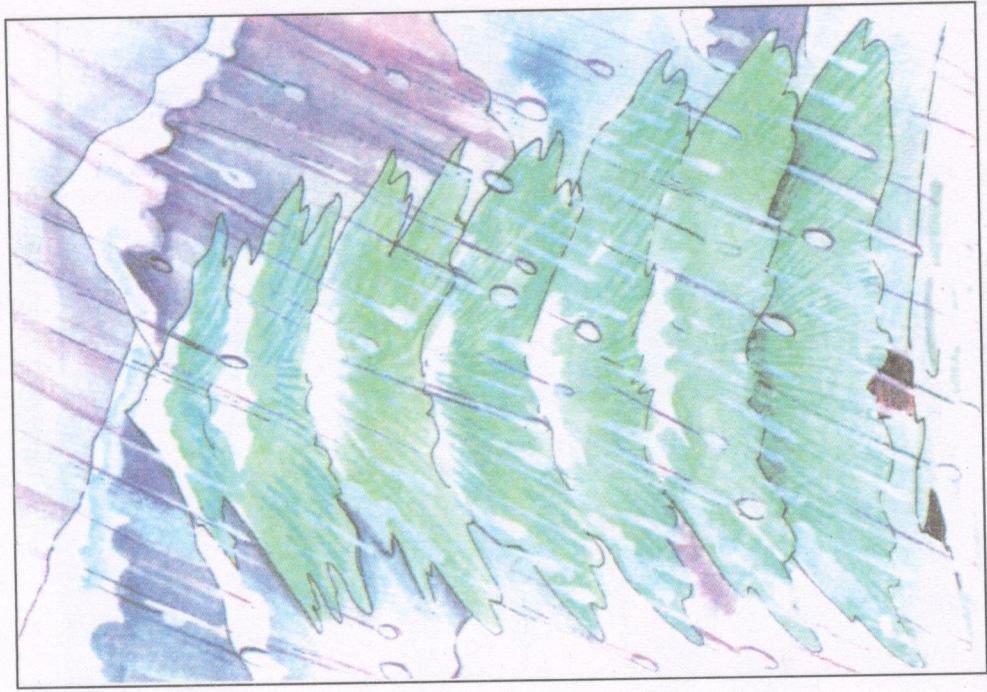
होली के दृश्य



लापरवाही से दुर्घटना



दुर्घटना एवं पोस्टमैन



हिमपात



सपेरा

1. मौसमानुसार अनेक प्रकार के फूलों की टाहनी सहित चित्र संयोजन करो।
2. प्रकृति के विषय चुनकर, जैसे खेल, पहाड़, नदी, पेड़, मकान आदि का आकर्षक चित्र-संयोजन करो।
3. प्रमुख पक्षियों का चित्रण करो।
4. विशेष पशुओं का चित्र संयोजन करो।
5. आकर्षक (बनावट की दृष्टि से) सब्जियों का चित्रण करो।
6. अपनी दृष्टि से बाज़ार का चित्र-संयोजन करो।
7. किसी पार्क का दृश्य बनाओ।
8. अपने विद्यालय का चित्रण करो।
9. अपने गांव का चित्र संयोजन करो।
10. अपने जन्मदिन समारोह का चित्र-संयोजन करो।
11. विद्यालय के क्रीड़ा दिवस का चित्रण करो।
12. विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम का चित्र बनाओ।
13. दीपावली का आकर्षक चित्र बनाओ।
14. दशहरा के मार्मिक दृश्य का चित्र संयोजन करो।
15. लोक नृत्य का सुन्दर चित्रण करो।
16. अपने स्थानीय मेले का चित्र-संयोजन करो।
17. किसी आकर्षक जलूस का चित्रण करो।
18. खेती या बागबानी का चित्र बनाओ।
19. वर्षाऋतु का वास्तविक चित्रण करो।
20. हिमपात का मनोहर चित्र-संयोजन करो।
21. अपने दूधवाले का चित्र बनाओ।
22. मदारी, भालूवाला तथा सर्कस का चित्रण करो।
23. दैनिक जीवन में होने वाली दुर्घटनाओं का चित्र-संयोजन करो।

